Reg No 177/2008-2009 ISSN: 2322–0317

PSSH PERSPECTIVE of SOCIAL SCIENCES and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 201

Biannual

Editor

Dr Hemant Kumar Singh

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

Herambh Welfare Society

Varanasi (India)

वर्तमान में आन्तरिक लेखा परीक्षा प्रणाली एवं उपयोगिता

दिनेश कुमार[1]

वर्तमान वर्षो में व्यापार एवं वाणिज्यिक प्रतिष्ठान के आकार एवं विविधता में जिस तीव्र गति से विकास एवं प्रगति हो रही है, उस गति से विविधता में सन्तुलन बनाये रखने के लिए आज आंतरिक लेखा परीक्षा प्रणाली का कार्य अत्यन्त आवष्यक हो गया है। आज प्रत्येक बड़े संस्थान एवं प्रतिष्ठान द्वारा विष्वव्यापी व्यापार के विस्तारीकरण के लिए एवं उत्पादन में वृद्वि के लिए हजारो कर्मियो की नियुक्ति की जाती है। इन्ही कर्मियो के माध्यम से देष के विभिन्न क्षेत्रो एवं विदेषो में भी कई क्षेत्रो से व्यापार का संचालन किये जाते है।इसलिए ऐसे संगठनो एवं बडे प्रतिष्ठानो के प्रबन्ध तन्त्र के लिए यह आवष्यक हो गया है कि वह विषेषज्ञों के समूह से एक ऐसा संगठन या प्रकोष्ठ अपने संसथान के अन्तर्गत स्थापित करे जो समय–समय पर इस आषय का जॉच करे कि संस्थान के सभी विभागों द्वारा दक्षतापूर्वक कार्यो का कियान्वयन निर्धारित नीति योजना इत्यादि द्वारा किया जा रहा है। लेकिन किसी विभाग, अनुभाग के कर्मियों द्वारा यदि इन नीतियों का अनुपालन नहीं किया जा रहा तो इसकी सूचना तत्काल प्रबन्धतन्त्र को अवगत कराये जाने का उत्तरदायित्व आन्तरिक लेखा परीक्षा संगठन का है जिससे प्रबन्धतन्त्र द्वारा आवश्यकतानुसार कार्य किया जाना सम्भव हो सके।

आन्तरिक लेखा परीक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देष्य आर्थिक विवरणों की शुद्धता एवं यर्थाथता की जॉच सही रूप से किया जाना होता है। यह विवरण संस्थान के कार्य एवं स्थिति के समाधान में सही जानकारी दे सके। अंकेक्षण का मुख्य आशय जॉच करना होता है लेकिन प्राचीन काल में व्यवसाय का स्वरूप प्रायः संक्षिप्त हुआ करता था इसलिये उनका लेन–देन सीमित हुआ करता था इसके फलस्वरूप अंकेक्षक समस्त लेन–देन को सुनकर ही उसके सुनकर ही अपना विचार प्रकट किया करते थे किन्तु वर्तमान समय में अंकेक्षण का उद्देश्य सर्वाधिक व्यापक हो गया है। लेखा पुस्तकों की सत्यता की एवं वास्तविकता की स्थिति को प्रकट करने के लिये जॉच किसी लेखा परीक्षक से करता है तथा पूरी लेखा पुस्तको की जॉच के बाद ही शुद्धता एवं सत्यता के बारे में एक अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत करता है इसी को अंकेक्षण कहते हैं। यह अंकेक्षण व्यवस्था संस्था के विष्वासी, अनुभवी तथा ईमानदार कर्मचारियों के द्वारा कराया जाता है यह अंकेक्षण व्यवस्था उच्च अधिकारियो के अध्यक्षता में किया जाता है। आन्तरिक अंकेक्षण करने वाले कर्मचारी

[1] असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, म0 गा0 काशी विद्यापीठ–एन.टी.पी.सी. परिसर, शक्तिनगर, सोनभद्र।

संस्था एवं प्रबंध तन्त्र के प्रति उत्तरदायी होते है।

वर्तमान समय में बडी–बडी कम्पनियॉ चाटर्ड एकाउण्टेण्ट को नियुक्त करके कर्मचारी के रुप में आंकेक्षण का कार्य करवाती है। इसमे आन्तरिक लेखा परीक्षक अपना प्रतिवेदन न देकर बल्कि सस्था के प्रबन्ध तन्त्र को अपना सुझाव देता है जो कि व्यवसाय संचालन मे सहायक सिद्ध होता है।

वर्तमान में अंकेक्षण कार्य वित्तीय लेखो तक सीमित न हो कर बल्कि इसका क्षेत्र काफी व्यापक हो गया है। आज अंकेक्षण के अन्तर्गत मात्र अंकेक्षण कार्यक्रम का निर्धारण, प्रमाणको का परीक्षण एवं संकलन तथा मूल्यवान निष्कर्ष की प्राप्ति तथा निष्कर्ष के आधार पर प्रतिवेदन प्रस्तुत करने तक ही सीमित नहीं है, आज वस्तुतः अंकेक्षण का क्षेत्र उस संस्था के प्रबन्धतन्त्र की व्यवस्था, उसकी उत्पादकता, एवं उपयोगिता, लागत लेखा के परीक्षण, राजस्व प्राप्ति के प्रति उस संस्था के प्रबन्ध तन्त्र की तत्परता तथा संस्था संपादन तक अंकेक्षण का कार्य काफी विस्तृत है। किसी संगठन या संस्था के प्रबन्धतन्त्र के लिए वर्तमान समय में आन्तरिक–लेखा–परीक्षा संगठन का सहयोग सम्पूर्ण व्यवस्था को नियमानुकूल रखने के लिए एक सषक्त माध्यम है। आज के समय मे आन्तरिक लेखा परीक्षा को प्रबन्ध तन्त्र की भुजा, ऑख, कान कहा जा सकता है। यह एक स्वाभाविक घटना है कि जितना बड़ा संगठन होगा उतना ही बडा संस्था का आकार एवं टर्न ओवर की मात्रा विषाल होगा। उसी के अनुसार प्रबन्ध तन्त्र तथा प्रषासनिक अधिकारियों तथा कर्मचारियों के बीच आन्तरिक सम्बन्ध की खाई या अन्तराल उतना ही व्यापक होता है।

परिणामस्वरूप उस संस्था के समस्त इकाई निर्धारित नीति के अनुसार संस्था हित में कहॉ तक कार्य कर रही है इसकी जानकारी प्रत्येक निर्धारित अन्तराल के बाद प्रबन्धतन्त्र को अवगत होना आवष्यक है। वर्तमान व्यापार एवं वाणिज्य के गति–प्रकृति ने दिन–प्रतिदिन हो रहे अभिवृद्वि एवं परिवर्तन किसी भी संगठन के प्रबंधतन्त्र के लिए संगठन के कार्यषैली पर प्रभावी नियन्त्रण रख पाना एक विषाल चुनौती हो गया है। चूंकि प्रबन्धतन्त्र के नीति निर्धारण एवं निर्णय लिए जाने सम्बन्धी कार्यो के बोझ से इतना अधिक दबा रहता है कि उनके लिए समयाभाव के कारण नियमित रुप से यह देखा जाना या नियंत्रित किया जाना सम्भव नहीं होता है कि संगठन में समस्त विभागों एवं अनुभागों द्वारा संगठन के उद्देष्यों तथा लक्ष्य की प्राप्ति हेतु निर्धारित नीति एवं योजनानुसार कार्य किया जा रहा है।

अतः आज प्रत्येक बडे संगठन विषेषकर सार्वजनिक उपक्रमों के लिए यह आवष्यक हो गया है कि वह अपने अन्दर ही ऐसा संगठन या विभाग स्थापित करे जो नियमित रुप से यह पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण करे की प्रबंधतन्त्र द्वारा निर्धारित नीति एवं योजनानुसार कार्यक्रम का कियान्वयन हो रहा है अथवा नही, इसी विभाग को आन्तरिक लेखा परीक्षा प्रणाली या सेल कहा गया है।

आन्तरिक लेखा परीक्षा प्रणाली के कार्य एवं क्षेत्रः

आन्तरिक लेखा परीक्षा प्रणाली के कार्य एवं क्षेत्र में निम्नलिखित को सम्मिलित किया जा सकता है जिसका विवरण अधोलिखित हैः

आन्तरिक नियन्त्रण प्रणाली तथा प्रकिया की समीक्षा

(क) अंकेक्षक को यह देखना होगा कि आन्तरिक नियन्त्रण प्रणाली संस्था के संगठनात्मक संरचना के अनुरुप है।
(ख) जहॉ भी सम्भव हो आन्तरिक नियन्त्रण की प्रणाली अपनी सम्बन्धित कार्य विधि के अन्तः निर्मित होनी चाहिए तथा अलग–अलग कार्य विधियों के लिए अलग–अलग नियन्त्रण विभागों को कम से कम उपयोग में लाई जानी चाहिए।
(ग) प्रत्येक आन्तरिक नियन्त्रण को उसकी लागत तथा लाभ दोनो की कसौटी पर परखना चाहिए।
(घ) अंकेक्षक को यह भी देखना होगा की आन्तरिक नियन्त्रण प्रणाली सम्पूर्ण जॉच की अवधि में उपयोग में रही है तथा मध्य अवधि में उसमें काई बडे परिवर्तन तो नही किये गये है।

सम्पत्तियों के रख–रखाव एवं सुरक्षा की समीक्षा

अंकेक्षक को यह भी देखना होगा कि क्या नियन्त्रण तन्त्र यह सुनिष्चित करने के लिए पर्याप्त है कि सभी सम्पत्तियॉ पूर्णतः लेखा पुस्तकों में दर्ज है। साथ ही उसे उन उपायों की भी समीक्षा करनी होगी जो सम्पत्तियों को सुरक्षित रखने के लिए किये गये है। उसे सम्पत्तियों की वास्तविक जॉच भी करनी चाहिए।

नीतियों, योजनाओं, प्रविधियों तथा नियम व विधानों के पालन की समीक्षाः

कर्मचारियों की नीतियों, नियमों आदि के पालन के लिये सही व समयानुसार जानकारी का मिलना आवश्यक है। अतः आन्तरिक अंकेक्षक को यह देखना चाहिये कि क्या प्रबन्धन ने ऐसी कोई प्रक्रिया बना रखी है जिसके द्वारा प्रत्येक कर्मचारियों को उसकी दायित्यों तथा अधिकारों के अनुसार जरूरी नीतियों, योजनाओं इत्यादि की बारे में जानकारी प्राप्त हो जाती है। उसे यह भी देखना चाहिये कि क्या प्रबन्ध महत्वपूर्ण लेखांकन नीतियों के सृजन या उनमें बदलाव से पहले वर्तमान तथा भविष्य में उससे होने वाले वित्तीय प्रभावों को ध्यान में रखता है।

सूचनाओं की प्रासंगिकता तथा विश्वसनीयता की समीक्षाः

अंकेक्षक को बाहरी संस्थानों जैसे– व्यापार संघों, श्रमिक संघों, सरकारी संस्थानों इत्यादि आन्तरिक स्तर पर प्रबन्धन के विभिन्न कार्यकर्ताओं तथा निदेशक मण्डल को दी जाने वाली प्रतिवेदन में निहित सूचनाओं की विश्वसनीयता तथा प्रासंगिकता के मूल्यांकन के लिये संगठन के सूचना तन्त्र की समीक्षा करनी चाहिये। साथ ही उसे उन दस्तावेजों की सही से जॉच भी करनी चाहिये। साथ ही उन प्रकियाओं का भी अध्ययन करना चाहिये जिनके द्वारा ली गयी सूचनाओं को वर्गीकृत तथा समायोजित करके प्रतिवेदन में सम्मिलित किया जाता है उसे प्रतिवेदन की समयबद्धता की भी समीक्षा करनी चाहिये।

संगठन संरचना की समीक्षाः

अंकेक्षक को संगठन संरचना की समीक्षा यह ज्ञात करने के लिए करनी चाहिए की क्या यह संगठन के उद्देष्य की पूर्ति में सहायक है अथवा इसमें बदलाव की जरुरत है। साथ ही संगठन संरचना के चार्ट के अध्ययन से यह

भी पता लगाना चाहिए की संरचना सरल तथा कम लागत वाली है उसे मुख्यतः यह अवष्य जॉच करना चाहिए कि प्रबंधकीय अधिकारियों और संचालन विभाग के अधिकारियों को मिले अधिकारो तथा उत्तरदायित्वों में सामंजस्य तथा किसी भी विषय पर दोनो के अधिकारों मे कोई पुनरावृत्ति नही होनी चाहिए। इसके साथ ही साथ प्रबंधकीय विकास की प्रक्रिया की समीक्षा भी यह ज्ञात करने के लिए की जानी चाहिए कि वरिष्ठ लोगो के सेवा निवृत होने पर उनके कार्यभार को संभालने के लिये उचित प्रषिक्षण व्यवस्था की गयी है।

संसाधनो के उपयोग की समीक्षाः

कुछ संसाधन उपयोग के कारण घटते है तथा कुछ उत्पादन में इस्तेमाल की गयी मषीने, कच्चा माल, बिजली इत्यादि। कुछ संसाधन उपयोग से नही बल्कि गलत व्यवस्था के कारण घटते है जैसे ख्याति आदि। ऐसे में अंकेक्षक या लेखा परीक्षक को यह देखना आवश्यक होता है कि क्या इन संसाधनों का अनुकूलतम् उपयोग किया जा रहा है? इसके लिये प्रबन्धन द्वारा स्थापित मानक परिचालन प्रक्रिया को मापदण्ड मानकर चलाया जा सकता है। उसे यह भी देखना चाहिये कि यह मापदण्ड इतने व्यापक तथा विवरणात्मक है कि उनके प्रयोग में काहीं कोई अवरोध तो नहीं है।

वास्तविक परिणामों तथा मापदण्डों में विचलन का अध्ययन करना चाहिये अगर दोना में व्यापक विचलन हो तो वास्तविक परिचालन प्रक्रिया की समीक्षा के साथ–साथ संगठनों द्वारा स्थापित मानकों की जॉच करनी चाहिये कि वे आवश्यक व उपयुक्त है अथवा नहीं। अंकेक्षक को उन संसाधनों तथा सेवाओं की भी पहचान करनी चाहिये जो अल्प–प्रयुक्त है जैसे– अनुपयुक्त मशीनें, श्रम शक्ति, रोकड़ इत्यादि। कर्मचारियों द्वारा किये गये कार्यो का मिलान उनके कार्य विवरण से कर के कम स्टापिंग वाले तथा अधिक स्टापिंक वाले विभागो की पहचान भी कर सकता है।

उद्देश्यों तथा लक्ष्यों की प्राप्ति की समीक्षाः

अंकेक्षक को संगठन या कम्पनी के उद्देश्यों तथा लक्ष्यों की समीक्षा करके यह जॉचना चाहिये कि क्या वे स्पष्ट तरीके से व्यक्त है या प्राप्त करने योग्य हैं। व्यापार में होने वाले आन्तरिक तथा बाहरी परिवर्तनों के हिसाब से कम्पनी के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों में भी बदलाव होना चाहिये। अंकेक्षक को यह देखना चाहिये कि उद्देश्यों को ज्यादातर मात्रात्मक आंकड़ों में प्रस्तुत किया गया हो। इससे नियोजन तथा बजटिंग में मदद मिलती है। इसके अतिरिक्त जिन विभागीय प्रबन्धन कर्मचारियों पर उद्देश्यों के प्राप्ति की जिम्मेदारी है, उन्हें भी इस कार्य को निर्धारित करने में भाग लेना चाहिये जिससे विभागीय समस्याओं को भी सामने रखा जा सके।

उपर्युक्त तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट है कि वर्तमान परिदृष्य में आन्तरिक लेखा परीक्षा प्रणाली स्थापित करके किसी भी संगठन या संस्था का समुचित वित्तीय ऑकड़ों को सही एवं मूल उद्देष्यों को पूरा करने में सफलता हासिल की जा सकती है।

संदर्भ

1. अंकेक्षणः डॉ टी0आर0 शर्मा, 2006, साहित्य पब्लिकेशन, आगरा।
2. अंकेक्षणः डॉ वी0के0 मेहता, 2007, साहित्य पब्लिकेशन, आगरा।
3. अंकेक्षण : सिद्धान्त एवं व्यवहार, बी0एन0 टण्डन, 2001, एस0 चन्द एण्ड कम्पनी, रामनगर, नई दिल्ली।
4. उच्च अंकेक्षणः योगेश चौधरी एवं श्वेता चौधरी, जुलाई 2008।
5. अंकेक्षण : सिद्धान्त एवं व्यवहार, जी0डी0 वर्मा, प्रदीप कुमार, बलदेव सचदेवा, जगवंत सिंह, 2000, कल्याणी पब्लिशर्ज, नई दिल्ली।